Dr• Manoj Kumar Singh
Assistant Professor
P.G.Deptt.of Psychology
Maharaja Bahadur Ram Ran Vijay Prasad Singh college Ara
Date; 24/02/2026
Class: U.G Semester - 4th
(MJC-5)
Abnormal Psychology,
Topic -

BEHAVIOURIST MODEL

परिचय (Introduction)

असामान्य व्यवहार के स्वरूप की व्याख्या एवं उपचार करने के लिए व्यवहारवादी

दृष्टिकोण की उत्पत्ति मनोविज्ञान के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सम्प्रदाय जिसे 'व्यवहारवाद के नाम से जाना जाता है. से हुई है। इस सम्प्रदाय ने असामान्य व्यवहार की व्याख्या के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण अवधारणाओं की व्याख्या में भी महत्त्वपूर्णयोगदान किया। यद्यपि व्यवहारवाद की औपचारिक स्थापना तो जॉन ब्रदर्स वाटसन (जे. बी. वाटसन) के द्वारा की गई थी लेकिन इसमें पॉवलव, स्मिथ, थॉर्नडाइक आदि मनोवैज्ञानिकों की भी सराहनीय भूमिका रही है। वाटसन ने शरीर क्रिया एवं तन्त्रिका तन्त्र में अन्तस्थ विकास व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन शिकागो विश्वविद्यालय से किया था। इनके अनुसार व्यवहार, उत्तेजना एवं उसकी अनुक्रिया का परिणाम है। व्यवहारवाद में अन्धविश्वासों, रहस्यों एवं दार्शनिक परम्पराओं को कोई स्थान नहीं दिया गया है। व्यवहारवाद के अनुसार, व्यक्तित्व के विकास में वातावरण का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। वातावरण में परिवर्तन करके किसी भी व्यक्ति को कुछ भी बनाया जा सकता है। व्यवहारवादी मॉडल असामान्य व्यवहार की व्याख्या आन्तरिक तथा अदृष्टिगोचर (Unobservable) कारकों के द्वारा न करके बाह्य तथा दृष्टिगोचर (Observable) कारकों के आधार पर करता है। इस मॉडल के समर्थक असामान्य व्यवहार की व्याख्या में फ्रायड के मनोविश्लेषणवादी मॉडल के आत्मनिष्ठ दृष्टिकोण को स्वीकार नहीं करते हैं।

व्यवहारवादी मॉडल की महत्त्वपूर्ण पूर्वकल्पना / मान्यताएँ (Important Assumptions of Behaviourist Model)

व्यवहारवादी मॉडल की महत्त्वपूर्ण पूर्वकल्पना / मान्यताएँ जो असामान्य व्यवहार पर प्रत्यक्ष रूप से लागू होती है, वे इस प्रकार है-

(1) पर्यावरणवाद (Environmentalism)- पर्यावरणवाद में इस बात पर जोर दिया गया है कि सभी प्राणी व्यवहार (मानव तथा पशु दोनों) पर्यावरण द्वारा निर्धारित होता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने गत साहचर्यों के आधार पर ही भविष्य के विषय में सीखते हैं। यही कारण है कि मानव व्यवहार को दंड एवं पुरस्कार द्वारा व्यवस्थित किया जाता है। मानव पुरस्कृत व्यवहार को पुनः भविष्य में दोहराना चाहता हैं तथा दंडित व्यवहार को वह त्यागना चाहता हैं।

(2) प्रयोगवाद (Experimentalism)-प्रयोगवाद में प्रयोग के माध्यम से यह पता लगाया जाता है कि पर्यावरण के किस पहलू से मानव व्यवहार प्रभावित होता है एवं किस प्रकार हम उसे परिवर्तित कर सकते हैं। यदि पर्यावरण के महत्त्वपूर्ण तथ्यों को रोक देते है तो व्यवहार की वर्तमान विशेषता समाप्त हो जाती है और यदि उन महत्त्वपूर्ण तथ्यों को पुनर्स्थापित कर देते है, तो व्यवहार की वर्तमान विशेषता पुनः वापस आ जाती है।

(3) आशावाद (Optimism)-आशावाद परिवर्तन से सम्बन्धित है। यदि मान ले कि व्यक्ति का व्यवहार पर्यावरण का प्रतिफल है और यदि पर्यावरण के उन सभी परिवर्तित पहलुओं को, प्रयोग द्वारा ज्ञात किया जा सकता है, तो पर्यावरण में

परिवर्तन होने से व्यक्ति में भी परिवर्तन अवश्य होगा। असामान्य व्यवहार की व्याख्या में उपर्युक्त तीनों पूर्वकल्पनाएँ प्रत्यक्ष रूप से उपयोग की गयी हैं-

(i) पहला, व्यक्ति सामान्य व असामान्य व्यवहार को अपनी गत अनुभूतियों से सीखता है अर्थात् यह उसकी गत अनुभूति का परिणाम / प्रतिफल है। अतः जब व्यक्ति अपअनुकूलित अर्जित आदतों को सीख लेता है, तो उससे व्यक्ति में असामान्यता / असामान्य व्यवहार की उत्पत्ति होती है।

(ii) दूसरा, पर्यावरण के किस पहलू से असामान्य व्यवहार की उत्पत्ति होती है। इस तथ्य का निर्धारण व्यक्ति प्रयोग करके कर सकता हैं।

(iii) तीसरा, यदि व्यक्ति पर्यावरण के इन पहलुओं को परिवर्तित कर देता हैं तो वह अपने पुराने कुसमायोजी व्यवहार को त्याग देगा तथा उसके स्थान पर नए समायोजित व्यवहार को सीख लेगा।

उक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि व्यवहारवादी मॉडल के अनुसार क्समायोजी या असामान्य व्यवहार के मुख्यतः दो कारण हैं-

(१) व्यक्ति द्वारा समायोजी व्यवहार / निपुणता / संतोषजनक वैयक्तिक सम्बन्धों को विकसित करने की उसकी असफलता, एवं

(ii) कुसमायोजित / अप्रभावी व्यवहार को सीखना।